UGC Journal Details

Name of the Journal :	Research Journey
ISSN Number :	
e-ISSN Number :	23487143
Source:	UNIV
Subject:	Marathi
Publisher:	Swatidhan International Publication
Country of Publication:	India
Broad Subject Category:	Multidisciplinary

Print

KVN Naik Arts, Commerce & Science College, IQAC OFFICE

Co-ordinator
I.Q.A.C.
KVN Naik Arts, Commerce
& Science College, Canada Corner,
Nashik-422 002.

'RESEARCH JOURNEY' *International E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 140- Application of Language Skills
UGC Approved Journal

हिंदी भाषा और भाषा कौशल

प्रा. नंदादेवी पंडितराव बोरसे
हिंदी विभाग प्रमुख
का.श्री.एन.नाईक कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
कॅनडा कॉर्नर, नाशिक – २
Email ID : nandadeviborse@gmail.com

आदिमानव ने भाव एवं विचार बोध तथा इनके विनिमय के लिए देह भाषा का ही सहारा लिया होगा। इसके साथ ही उसने कुछ ध्वनि– प्रतीकों का प्रयोग भी आरंभ किया होगा, जिससे भाषा का अविष्कार हुआ। ध्वनि–प्रतिकों के रूप में अविष्कृत भाषा को 'वाचिक भाषा' कह सकते है। आरंभ में मानव–भाषा में आंगिक संकेत अधिक थे और वाचिक कम, किंतु धीरे–धीरे अंग संकेत कम होते गए और ध्वनि प्रतिकों या वाचिक रूप का प्रयोग बढता गया। भाषा का प्रयोग मनुष्य अपने सामूहिक अथवा सामाजिक जीवन में ही करता है और वहीं से उसे सीखता भी है। अकेले में आदमी भाषा के सहारे सोचता अवश्य है, लेकिन उसका मुखर प्रयोग समाज में ही करता है, समाज में उसका विकास होता है। अत: भाषा आद्यन्त सामाजिक संस्था है।

भाषा मूलत: वाचिक अथवा मौखिक उपलब्धि है, जिसका प्रयोग वर्तमान में सामने उपस्थित लोगों के समक्ष भाव एवं विचाराभिव्यक्ति के लिए ही किया जा सकता है, लेकिन सभ्यता के विकास के साथ मानव ने अपनी अनुपस्थिती में कोई सूचना पीछे छोड जाने, सूचनाओं को प्रसारित करने या अपने किसी अनुभव को सुरक्षित रखने, अपने विचारों और भावनाओं को समय से आगे बढाकर उन्हें कालातीत बना देने की आवश्यकता अनुभव की होगी। इसके लिए पहला प्रयास रेखांकन और चित्रांकन के रूप में हुआ होगा। गुफाओं की दीवारों पर बनाए गए चित्रों का विकास बाद में लकडी, पत्थर और दूसरी अपेक्षाकृत कम टिकाऊ चीजों पर भावांकन के रूप में हुआ और भाषा का लिखित रूप अस्तित्व में आया होगा।

संस्कृत की जिस 'भाष' धातू से 'भाषा' शब्द बना है, उसका अर्थ 'कहना' अथवा 'बोलना' है। जिसे विचार अथवा अनुभव की स्थिती कहा जाता है, वह वास्तव में आत्म–संभाषण ही होता है। इसीलिए प्लेटो ने कहा है कि, " विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है, पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे 'भाषा' कहते है। अर्थात भाषा मनुष्य के उच्चारण – अवयवों द्वारा उच्चारित यादृच्छिक ध्वनी प्रतिकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा एक समाज के लोग परस्पर सहयोग कर पाते हैं।

भाषा भावना तथा विचार प्रकट करने का प्रभावी साधन है। विचार–भावना, क्रिया, प्रतिक्रिया इनका प्रकटीकरण प्रथम होता है वह भाषा के माध्यम से । पहले भाषा बोली गयी और बाद में लिपी की खोज की गई । इसका अर्थ मानवी समाज में अविष्कार या अभिव्यक्ति का पहला माध्यम वाणी बोलना है। भाषा संवाद का प्रथम माध्यम है। इसलिए भाषिक कौशल्य का स्वरूप और उसका हमारे व्यक्तित्व से रोजमर्रा के जीवन से आनेवाले संबंधों को समझना चाहिए। हमारे व्यक्तित्व का विकास करने के लिए हमें अच्छा बोलना और अच्छा लिखना आना जरूरी है। उच्चारण से हमारे संस्कार और लेखनसे हमारी विद्वत्ता प्रकट होती है। प्रभावी अभिव्यक्ति समृध्द व्यक्तित्व की पहचान होती है।

भाषा–कौशल –:

मनुष्य समाज में अन्य व्यक्तियों से सम्प्रेषण करने के लिए वह बोलकर या लिखकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है तथा सुनकर या पढकर उनके विचारों को ग्रहण करता है। भाषा से संबंधित इन चारों

क्रियाओं के प्रयोग करने की क्षमता को 'भाषा कौशल' कहा जाता है। इनका विकास एवं इनमें दक्षता प्राप्त करना ही भाषा शिक्षण का उद्देश्य है।

भाषा कौशल्य को चार प्रकारों में बॉटा गया है :–

१. श्रवण कौशल – (सुनकर अर्थ ग्रहण करने का कौशल)
२. वचन कौशल – (बोलने का कौशल)
३. पढ़न कौशल – (पढकर अर्थ ग्रहण करने के कौशल)
४. लेखन कौशल – (लिखने का कौशल)

ये चारों कौशल एक–दुसरे से अन्त: सम्बन्धित होते है अर्थात किसी न किसी रूप में एक–दुसरे पर निर्भर करते है। व्यक्ति के सर्वांगिण विकास में भाषायी कौशल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

श्रवण कौशल – ध्वनियों और उच्चारण को सुनना, ध्यानपूर्वक सुनना और सुनकर उसके अर्थ को समझना और उसे ग्रहन करने की योग्यता 'श्रवण कौशल' कहलाता है।

श्रवण कौशल अन्य भाषीय कौशलों को आधार प्रदान करता है। श्रवण कौशलों के लिए मस्तिष्क की एकाग्रता एवं इंद्रियों का संयम आवश्यक होता है। मनुष्य की बात करने की (बोलने) तैयारी सुनने से शुरू होती है। बोलने के लिए हमारा पहला कदम था श्रवण। हम शब्दों के उच्चारण को सुनते है, ह्रस्व – दीर्घ की लय सुनते है, उच्चारण के आरोह– अवरोह की ओर ध्यान देते है, संयुक्त अक्षरों का ध्यानपूर्वक श्रवण करते है और इन सबके परिणाम स्वरूप हम वैसे ही बोलने का प्रयास करते है। आसपास की अनेक बातें, वस्तु, मनुष्य – प्राणी – पंछी, उनकी अलग – अलग ध्वनी, बोलने की पध्दतीयॉ, विचार इनका आकलन हमें श्रवण के माध्यम से होता है। इससे ध्वनियों के सूक्ष्म अंतर को पहचानने की क्षमता विकसित होती है। इसका उद्देश धैर्यपूर्वक सुनना, सुनने के शिष्टाचार का पालन करना, शब्दों, मुहावरों, उक्तियों का अर्थ व भाव समझना है तथा छात्रों का मानसिक एवं बौध्दिक विकास करना है।

वाचन कौशल – वाचन या बोलना भाषा का वह रूप है जिसका सबसे अधिक प्रयोग होता है। भावों व विचारों की अभिव्यक्ति साधारणत: उच्चारित भाषा ही होती है। विचारों का आदान– प्रदान करने के लिए, सरल, स्पष्ट एवं सहज बातचीत के लिए, सामाजिक जीवन में सामंजस्य तथा सामाजिक सम्बन्धों को सुदृढ बनाने में वाचन कौशल की प्रमुख भुमिका तथा महत्व होता है। यह मौखिक अभिव्यक्ति है। इसके विकास के लिए शब्दों के उच्चारण स्थानों का ज्ञान आवश्यक है। शब्दों का उच्चारण मात्र करना वाचन कौशल नही बल्कि शुध्द उच्चारण, उचित स्वर, उचित गति के साथ बोलना सिखाना 'वाचन कौशल' है।

छात्रों को धाराप्रवाह, प्रभावपूर्ण वाणी में बोलना सिखाना, नि:संकोच होकर अपने विचार व्यक्त करने के योग्य बनाना, अनुकूल भाषा का प्रयोग करना सिखाना, सरल–सुबोध तथा मुहावरेदार भाषा का प्रयोग सिखाना, तथा स्पष्टता वाचन कौशल का महत्वपूर्ण गुण है।

वाचन की प्राथमिक तैयारी श्रवण के साथ – साथ वाचन से भी होती है। वाचन से मनुष्य की विचार क्षमता बढ़ती है, कल्पनाशक्ति विकसित होती है, संस्कृती परंपरा की पहचान होती है, बुध्दी का कलात्मक विकास होता है, शब्दसंग्रह बढ़ता है, कठीण शब्दों के अर्थ ज्ञात होते है, मुहावरें– लोकोक्तियों की जानकारी मिलती है, नये शब्दों की पहचान होती है। कोई लेखक जीवन के बारे में किस प्रकार सोचता है, विचार करता

यह सारे भाषिक कौशल ही है। इनका सफर पढनेवाले तथा श्रोता इनकी दिशाओं में चलता है। और यह सफर मनुष्य से मनुष्य तक का होता है। हमारे अंर्तमन का आशय पढनेवालों को ठीक से ज्ञात हो, उसके द्वारा श्रोता की बुद्धी तथा भावना को स्पर्श करना यही उसका उद्देश है। शब्द सुंदर, अर्थपूर्ण, समर्पक तथा प्रवाही हुए तो वे लेखक– श्रोता, वक्ता–श्रोता इनमें सुंदर संवाद स्थापित करते है और यही सामाजिक–व्यावसायिक संबंध तो दृढ करते ही है लेकिन एक दुसरें के मन को भी जोडते है और श्रेष्ठ प्रती का आनंद प्राप्त कर देते है। शब्दसंग्रह जितना समृद्ध होता है, अभिव्यक्ति उतनी ही आकर्षक तथा प्रभावी होती है। शब्दों को भी रूप होता है, संगीत होता है, व्यक्तित्व होता है और यह सब समझने के लिए शब्दों से सामीप्य होना चाहिए, नजदीक का रिश्ता होना चाहिए तभी हमारा लेखन महत्वपूर्ण बनता है, उसकी शैली बदलती है और उस लेखन को धीरे– धीरे खुद का अलग रूप, व्यक्तित्व प्राप्त होता है।

भाषा के पूर्ण ज्ञान के लिए, विचारों को मूर्त रूप देने तथा सुरखित रखने के लिए लेखन कौशल का महत्व होता है। स्वच्छ और शुद्ध लेख, अपने विचारों भावों को प्रकट करने की योग्यता, व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग, नवीन शब्दावली का प्रयोग ये लेखन कौशल के उद्देश है। लेखन के अभ्यास को– सुलेख, अनुलेख तथा श्रुतलेख आदि श्रेणियों में विभाजित किया जाता है।

इसप्रकार भाषिक कौशल हमारे व्यक्तित्व के विकास के लिए महत्वपूर्ण माने जाते है।